E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

November 2022 Special Issue 07 Volume I SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

November 2022

Special Issue 07 Volume I

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.67

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

ISRA JIF

Digital Online Identifier-Database System

An International Digital and Virtual Library

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
November 2022 Special Issue 07 Volume I SJIF Impact- 5.67

Index

Sr No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1.	श्रीलंका में वैष्णव धर्म का प्रभाव	डॉ. वजिरा गुणसेना	05
2.	जिला ग्वालियर में नगरीय जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	रितिका कुशवाह प्रो. शिवराज सिंह तोमर	11
3.	समकालीन हिंदी उपन्यास में पर्यावरण चेतना	पि. विजय कुमार	16
4.	साहित्य और समाज में कानून की भूमिका	डॉ. अमिता एल. टंडेल	19
5.	लक्ष्मीनारायण लाल और विजय तेंडुलकर के नाटकों में अभिव्यक्त मज़दूर विमर्श (रातरानी और श्रीमंत नाटक के विशेष संदर्भ में)	श्रीमती गौतमी अनुप पाटील	23
6.	संत लालदास के काव्य में शान्ति और अहिंसा का स्वरूप	डॉ.यशोदा मेहरा	27
7.	गांधी: खादी चरखा कुटीर उद्योग	डॉ. नीलम चौरे डॉ. अजय आर चौरे	30
8.	सामाजिक विकास में आकाशवाणी और भारतीय भाषाओं का योगदान	डॉ. जितेंद्र पितांबर पाटिल	33
9.	अनुवाद और उसका हिन्दी भाषा वैज्ञानिक स्वरूप एवं विशेषताएँ	डॉ. संतोष कुमार अहिरवार	36
10.	दूधनाथ सिंह के उपन्यास 'निष्कासन' में दलित विमर्श	जय प्रकाश मौर्य	39
11.	वैश्वीकरण और अनुवाद	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	42
12.	पंकज मित्र की कहानियों में वृद्ध विमर्श	डॉ. प्रज्ञा गुप्ता	45
13.	अमृता प्रीतम और कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित देश-विभाजन की त्रासदी	केएम मेनिका सिंह	48
14.	प्रेमचंद एवं फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में अभिव्यक्त लोकजीवन का स्वरुप	अभिषेक सौरभ	51
15.	राष्ट्रीयता और गुप्त जी की भारत-भारती	संदीप हंसराज शिंदे	55
16.	महादेवी वर्मा के काव्य में प्रतीक योजना	डॉ.जालिंदर इंगले	58
17.	भारत में दिव्यांगता और 2016 का अधिनियम	डॉ अजय आर चौरे डॉ नीलम चौरे	61
18.	नागार्जुन के कथा साहित्य (उपन्यासों) का स्वनिमिक अध्ययन	प्रो. डॉ. राजेंद्र खैरनार सुजाता विठ्ठल भालेराव	63
19.	वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की चुनौतियां	प्रतिमा चौरसिया	67
20.	महीप सिंह के कथा साहित्य में अभिव्यक्त महानगरीय परिवेश	श्रीमती उर्वशी विकास शरण	70
21	स्त्री-प्रश्न और अनामिका की कहानियाँ	गौरी शंकर कुमार	73
22	हिन्दी कला सिनेमा में स्त्री जीवन की अभिव्यक्ति	डॉ. पूनम मियान	76
23.	21 वीं सदी के हिंदी फिल्मो में राष्ट्रीय भावना	डी. एस. घुटुकडे	79
24.	लघु एवं कुटीर उद्योग में कृषि विकास का मूल्यांकन	सौरभ कुमार गुप्ता	81

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
November 2022 Special Issue 07 Volume I SJIF Impact- 5.67

23

21 वीं सदी के हिंदी फिल्मो में राष्ट्रीय भावना

डी. एस. घुटुकडे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
भारती विद्यापीठ, मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्यालय, कडेगाव।

सार – हिन्दुस्तानी फिल्म जगत में आधुनिक कालखंड में अनेक ऐसी फिल्मों का निर्माण हुआ जिन्होंने अपने कथाशिल्प के माध्यम से देशवासियों के मन में राष्ट्रीय भावना का सृजन करने में सराहनीय योगदान दिया है। ये फिल्में केवल मनोरंजन का सीमित उद्देश्य लेकर लोगों तक नहीं पहुँचती अपितु राष्ट्रीयता की प्रबल धारा को गति देने के कार्य भी उनके माध्यम से हुआ है।

मुख्य शब्द – राष्ट्रनिष्ठा, त्याग, बलिदान, आजादी, समर्पन, देशप्रेम, फिल्म ।

प्रस्तावना –

राष्ट्रभक्ति प्रत्येक देश के व्यक्ति की अत्यंत आत्मीय भावना होती है। देश के प्रति समर्पण वृत्ति के कारण ही व्यक्ति की निष्ठा और गौरव को पहचान प्राप्त होती है। दुनिया के तमाम सार्वजनिक क्षेत्रों ने अपने राष्ट्रवादी विचारों का समय- समय पर दर्शन किया है। भारतीय सिनेमा जगत भी इस परंपरा से अस्पर्शित नहीं रहा। आजादी के लिए गए प्रत्येक गतिविधियों की अनुगूंज सिनेमा जगत में सुनायी देती है। देश के सम्मान, गौरव, स्नेह हेतू जनमानस को प्रेरित करके उनकी चेतनाओं में ऊर्जा का निर्माण करने का कार्य सिनेमा ने किया है। आधुनिक युग में भी यह परंपरा निरंतर प्रवाहमान है।

15 अगस्त, 1947 भारतीय जनमानस पर अंकित वह तिथि है जिसने अतित, वर्तमान और भविष्य के प्रत्येक क्षण को अपने में समेट लिया है। गुलामी के दर्दनाक एवं अन्यायी जोखडों से मुक्ति के खुले गगन में जीने के अवसर प्रदान करनेवाली आजादी के इतिहास का हर पन्ना हमारे लिए गौरव का प्रतीक है। प्रखर देशभक्ति की भावनाओं का अमर इतिहास प्रत्येक काल के प्रत्येक क्षण को उत्साहित, प्रेरित करता है। उसकी अभिव्यक्ति के विभिन्न स्वर, माध्यम, घटक अपनी प्रतिबध्दता का निस्सीमता से निर्वाह कर रहे है।

आजादी के पूर्व कालखंड में हिन्दूस्तान के क्रांतिकारियोंद्वारा किया कार्य,आंदोलन, विरोध, बलिदान ने आज वर्तमान समय में हमारे लिए हमारे मुक्ति का द्वार खोल दिया। स्वतंत्र, स्वच्छंद, बंधनमुक्त जीवन जीने का अधिकार दिया। हिन्दुस्तान की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रभावित करनेवाली आजादी के आंदोलन की घटनाएँ आज भी हमारे शरीर पर रोंगटे खडी करती है। अदम्य साहस, प्रखर राष्ट्रनिष्ठा, अनन्य देशहित की भावना से प्रेरित विद्रोही क्रांतिकारियों की जीवनगाथा से समाज, साहित्य, सभ्यता पूरी तरह से प्रभावित रही। हिन्दुस्तान की प्रत्येक भाषा में बनी विभिन्न फिल्मों ने इनका सजीव और प्रेरक दर्शन किया। 1857 की लडाई जालियाँवाला बाग हत्याकांड, भारत छोडो आंदोलन, 1947 की आजादी, भारत- पाकिस्तान विभाजन, भारत- चीन युद्ध, भारत-पाकिस्तान युद्ध, कारगिल युद्ध आदि जैसी अनेक घटनाओं की स्मृतियाँ हमारे मन को आंदोलित करती है। यह घटनाएँ केवल घटनाएँ न होकर हमारे देश का सजीव इतिहास है जो आनेवाली पीढी को निरंतर अपने आप से जोडता रहेगा।

हमारे देश में हर साल अनेक फिल्में बनती है उसमें कथा की विभिन्नता होती है। देशभक्ति, राष्ट्रीय भावना पर आधारित सैकडों फिल्में बनी है, जो दर्शकों के आकर्षण का केंद्र रही है। अनेक ऐसी फिल्में है जिन्होंने उत्कट राष्ट्रनिष्ठा का सप्रमाण परिचय दिया है। प्राचीन काल के, अनेक पराक्रमी योद्धा, सम्राट- राजाओं का शौर्य आदि पर भी फिल्मों का निर्माण हुआ। स्वाधीनता संग्राम की कथा तो प्रत्येक भारतीय का आत्मीय विषय रहा है। मंगल पांडे, झाँसी की रानी, शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद, सुभाषचंद्र बोस, म. गांधी आदि जननायकों के जीवन परिचय, अतुलनीय पराक्रम, शहादत पर भी फिल्मों का निर्माण हुआ। 21 वीं सदी की अनेक ऐसी फिल्में है जिन्होंने राष्ट्रीयता की भावना में वृद्धि करने का कार्य किया और जनमानस को प्रभावित किया। स्वदेश का गुणगान, जन्मभूमि के प्रति निष्ठा, महापुरुषों का शौर्य, बलिदान की अमर गाथा आदि विषयों पर बनी अनेक फिल्में लोकप्रिय हुई दिखायी देती है। वस्तुत: फिल्म लोगों के मनोरंजन का माध्यम है साथ ही इन फिल्मों ने लोगों में देशभक्ति की भावना को प्रबल बनाने में बहुमूल्य योगदान दिया है। अनेक ऐसी फिल्में है जिन्होंने ऐसी घटनाओं को दर्शाया जो न तो अत्यधिक लोकचर्चित थी अथवा जिसका न अधिक बोलबाला था। इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा की फिल्में मनोरंजन, ज्ञानवृध्दि के साथ- साथ राष्ट्रीय भावना की धारा को निरंतर प्रवाहित करती है।

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
November 2022 Special Issue 07 Volume I SJIF Impact- 5.67

21 वीं सदी में '23 मार्च शहीद', 'द लिजेंड ऑफ भगतसिंह', 'शहीद- ए- आजम', 'रंग दे बसंती', 'एल. ओ. सी. कारगिल', 'लगान', 'स्वदेश', 'मंगल पांडे', 'गाजी हमला', 'उरी: द सर्जिकल स्ट्राईक', 'राजी', 'केसरी', जैसी अनगिनत फिल्में है जिसमें देशभक्ति का प्रचुरता से दर्शन होता है। ये ऐसी फिल्में है जो हमारे देशवासियों के मन में मातृभुमि के विषय में निष्ठा, भक्ति, श्रध्दा, सम्मान, स्नेह, अभिमान की भावना का निर्माण कर राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करती है। इनमें से कुछ गिने-चुने फिल्मों में व्यक्त राष्ट्रीयता की भावना को इस रुप में अभिव्यक्त किया जा सकता है।

'23 मार्च शहीद', 'द लिजेंड ऑफ भगतसिंह', 'शहीद- ए- आजम' ये तीन ऐसी फिल्में है जिसमें मातृभूमि के महानायक, अमर बलिदानी, सर्वश्रेष्ठ देशभक्त भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव की कहानी दिखायी है। त्याग, समर्पन, बलिदान का सर्वोच्च प्रमाण इन तीन देशभक्तों ने देश के सामने रखा। ''महज 23 साल की युवावस्था में मातृभूमि के लिए हँसते – हँसते फाँसी का स्वीकार करनेवाले ये नौजवान देशवासियों की प्रेरणा का स्त्रोत है। राष्ट्रीय भावना का यह जज्बा अतुलनीय है।''[1] वर्तमान युग में रहनेवाली युवा पीढी के सामने इन्होंने राष्ट्रप्रेम का आदर्श रखने का कार्य किया है। व्यक्तिगत स्वार्थ, हित में व्यस्त, प्रलोभन, मनोरंजन, मौज-मस्ती के पिछे दौडनेवाली, आरामदेह जीवन के आकांक्षी देश की युवा पीढी को इन फिल्मों ने मातृभूमि के लिए मर मिटने, राष्ट्रीयता की भावना को प्राथमिकता देने, अन्याय- अत्याचार के विरोध में खडा होने की सीख दी है। मृत्यू को भी हँसकर गले लगाने की तन्मयता का निर्माण अतिउच्च राष्ट्रनिष्ठा से ही संभव है इसकी सजीव अभिव्यक्ति इन फिल्मों में हुई है। हिन्दुस्तान को आजादी देने के लिए इनके द्वारा किए गए कार्य, संघर्ष, भोगी हुई यातनाएँ सामान्य घटनाएँ नहीं है बल्कि आनेवाली पीढीयों के लिए दिया आजादी का वरदान था। इसलिए इन शहीदों की शहादत को निरंतर स्मृतियों में अंकित रखकर देशनिष्ठा को कायम रखने की ये फिल्में सीख देते हुए हमेशा राष्ट्रीय भावना को बलशाली बनाती रहेगी।

2019 में प्रसारित 'केसरी', फिल्म भी देश की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देनेवाले अमर जवानों की अमर गाथा है। हमारे देश के इतिहास में ऐसी अनेक घटनाएँ है जिनका हमें ठिक से पता भी नहीं है। 'केसरी' फिल्म की कथा ऐसी ही वीरतापूर्ण कथा है जो हमें राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत करती है। अदम्य साहस का इसमें दर्शन होता है। ''1897 की घटना सारागढी किले पर जब दस हजार अफगाणी आक्रमणकारी हमला करते है तो किले में मौजूद केवल बीस सीख सैनिकों को साथ लेकर हवलदार ईशर सिंह अफगाणी हमलावरों पर टूट पडते है यह अपने आप में एक वीरता की बेजोड निशानी है।''[2] यह फिल्म निश्चित ही हमारे देशवासियों में देशभक्ति की भावना जगाने का काम करती है। मातृभूमि की रक्षा के लिए अंतिम साँस तक शत्रुओं से संघर्ष करके वीरगति को प्राप्त करनेवाले इन जाँबाज सैनिकों का कार्य राष्ट्रनिष्ठा की सर्वोत्तम पहचान है। इस फिल्म का 'तेरी मिट्टी में मिल जावाँ' यह ओजस्वी गीत भी देशवासियों के हदय को उत्साहित और प्रेरित करता है।

निष्कर्ष –

देशप्रेम की भावना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यंत सम्मान और गौरव की भावना होती है। हमारे देश के अनेक क्षेत्रों के विभिन्न घटकों ने इसका सप्रमाण परिचय दिया है। भारतीय फिल्मों ने भी अपनी आरंभाव्यस्था से लेकर वर्तमान समय तक राष्ट्रीय भावना से प्रेरित अनेक कथाओं के माध्यम से मातृभूमि के रक्षण, महत्त्व सम्मान को लोगों तक पहुँचाकर उनमें देशभक्ति की भावना निर्माण करने का निरंतर प्रयास किया है। 21 वीं सदी की अनेक फिल्में है जिन्होंने राष्ट्रीय कर्म और धर्म का स्वयं पालन किया और देशवासियों में राष्ट्रीय भावना का विकास कर अपनी प्रतिबध्दता का निर्वाह भी किया।

संदर्भ –

1- https://hi.m.wikipedia.org.wiki,27/10/2022,08.30pm.
2- https://www.amarujala.com 28/10/2022, 04.30pm